अध्याय 5

क्या आप तैयार हैं?

विद्यालयों और घरों में सुरक्षा की युक्तियाँ

खतरे को कम करने में समुदाय के सदस्यों द्वारा निभाई गई भूमिका और सामुदायिक आपदा प्रबंधन योजना की तैयारी में उठाए गए कदमों के महत्व के विषय में पिछले अध्याय में हमने चर्चा की थी। घर और विद्यालय समुदाय के महत्वपूर्ण अंग हैं। अत: घरों और विद्यालय में एक सुरक्षित वातावरण बनाना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि विद्यार्थी इन्हीं स्थानों में अपना काफी समय व्यतीत करते हैं। घरों और विद्यालयों को प्राकृतिक और मानवप्रेरित संकटों से बचाना मनुष्यों का ही दायित्व है। यह ऐसा दायित्व है जिसे प्रत्येक विद्यालय और समुदाय को गंभीरता से लेना चाहिए तथा इसकी प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्न करने चाहिए।

विगत कुछ वर्षों में बहुत बड़ी संख्या में प्राकृतिक और मानव प्रेरित घटनाएं घटी हैं, जिनमें बड़ी भारी संख्या में विद्यार्थी प्रभावित हुए हैं। गुजरात के भूकंप (26 जनवरी 2001) में 971 विद्यार्थी और 31 शिक्षक मारे गए थे। कमजोर निर्माण के कारण 1884 विद्यालयों के भवन ढह गए थे। भुज (गुजरात) में गणतंत्र दिवस की शोभा यात्रा में 300 विद्यार्थी भाग ले रहे थे। भूकंप आने पर तंग गलियों के दोनों ओर के भवन ढह गए और विद्यार्थी इन्हीं भवनों के मलबे में दब गए थे। ऐसी सूचनाएँ हैं कि विद्यार्थी खुले मैदान से विद्यालय के भवनों की ओर दौड़ रहे थे क्योंकि जमीन के थरथराने से उन्हें बम विस्फोट की आशंका सता रही थी।

12 मई 2008 को चीन के भूकंप में एक हाई स्कूल के 900 से अधिक विद्यार्थी मारे गए थे। यह घटना भी हमें यही याद दिलाती है कि विद्यालय संरचनात्मक और गैर संरचनात्मक दोनों ही तरह से सुरक्षित होने चाहिए। यदि विद्यार्थियों और शिक्षकों ने नियमित नकली अभ्यास किया होता तो अनेक लोगों के बहुमूल्य जीवन को बचाया जा सकता था। यही नहीं, विद्यालय आपदा प्रबंधन योजना भी इसमें मददगार सिद्ध होती।

एक विद्यार्थी मलबे के ढेर में मिली पुस्तकों को देख रहा है। यह दृश्य शनिवार 17 मई 2008 में दक्षिण व पश्चिमी सिचुआव प्रांत के जुयान मिडिल स्कूल का है। इस स्कूल के 900 विद्यार्थियों में से कुछ को छोड़कर सभी मारे गए थे। स्कूल सोमवार के भवन के भूकंप में ढह गया था।

जुलाई 2004 में तमिलनाडु के कुंभकोनम में स्थित लार्ड कृष्णा स्कूल में भीषण आग लग गई थी। इसमें 11 वर्ष से कम आयु के 93 बच्चे मारे गए थे। यह घटना भी स्कूलों में बच्चों की असुरक्षा की ही ओर संकेत करती है। इस

दुर्घटना के प्रभाव को काफी हद तक कम किया जा सकता था, यदि प्रशासक, शिक्षक और विद्यार्थी घटना से पहले बेहतर तरीके से प्रशिक्षित किये गए होते, और प्रशासन ने विद्यालय में रसोई की स्थिति पर ध्यान किया होता। यही नहीं आग बुझाने वाले यंत्रों और रेत के बोरों की स्थिति और स्कूल में स्थान खाली कराने की योजना की तैयारी पर भी ध्यान दिया होता और शिक्षकों तथा विद्यार्थियों में आग से सुरक्षा के विषय में जागरूकता पैदा की गई होती और यदि शिक्षकों और विद्यार्थियों को समुचित ढंग से संवेदीकृत किया गया होता तो 93 विद्यार्थियों को सुरक्षित स्थानों पर लेजा कर उनके मूल्यवान जीवन को बचाया जा सकता था।

क्रिया कलाप-1 : ऐसी ही दुर्घटनाओं / आपदाओं का पता लगाइये, जिनमें विद्यालय प्रभावित हुए हों। डबवाली आग, पाकिस्तान और भारत के भूकंप तथा चीन में अभी कुछ दिन पहले का भूकंप ऐसे ही कुछ अन्य उदाहरण हैं। इनसे मिली सीख को पहचानिये तथा ऐसी घटनाओं के दुष्प्रभावों को कम करने में स्कूलों द्वारा निभाई गई भूमिकाओं का भी पता लगाइये।

ऊपर दी गई घटनाएँ प्रशासकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों को उल्लेखनीय सीख देती है ताकि वे स्कूलों में सुरक्षित वातावरण बनाने का प्रयत्न करें। एक सुरक्षित और समर्थ वातावरण बनाने के लिए हममें से प्रत्येक का कुछ न कुछ कर्तव्य है क्योंकि आपदा पूर्व चेतावनी देकर कभी नहीं आती। घरों और स्कूलों में किए जा सकने वाले कुछ मूल क्रियाकलाप नीचे दिए गए हैं :

1. स्कूलों और घरों में विभिन्न संकटों के विषय में जागरूकता पैदा करना।

2. विद्यालय आपदा प्रबंधन योजना बनाना।

3. स्कूलों की सुरक्षित स्थिति सुनिश्चित करना। इन्हें व्यस्त सड़कों, निम्न भूमियों, रेल मार्गों, अस्पतालों आदि से दूर रखना।

4. स्कूलों की संरचनात्मक और गैर-संरचनात्मक सुरक्षा को सुनिश्चित करना।

क्रिया कलाप – 2 : स्कूलों में घट सकने वाले कुछ सामान्य प्राकृतिक और मानव प्रेरित संकटों की सूची बनाइये।

प्राकृतिक संकट

1. बाढ़

2. चक्रवात

3. ....

4. ....

मानव प्रेरित

1. वार्षिकोत्सवों के अवसर पर आग और भगदड़ जैसी दुर्घटनाएं
2. भ्रमण
3. स्कूल के परिसर में आग (कैंटीन, कक्षा कक्ष, प्रयोगशाला आदि)
4. आतंकी हमले
5. अपहरण
6. जानबूझकर हिंसा के काम
7. भोजन की विषाक्तता
8. आने जाने में दुर्घटनाएं
9. ....
10. ....

अब कहानी पढ़िए

यहां मीना नाम की विद्यालय में पढ़ने वाली छात्रा और उसकी शिक्षिका रेणु की कहानी दी गई है। इन्होंने स्वेच्छा से स्कूल आपदा प्रबंधन योजना बनाने की पहल की। यही नहीं, इन्होंने स्कूल के आस पास के परिवारों को भी परिवार आपदा प्रबंधन योजना बनाने में मदद की।

सामाजिक विज्ञान की कक्षा में सामान्य चर्चा हो रही थी। शिक्षिका रेणु जी विद्यार्थियों से सदैव नागरिक दायित्वों की बातें करती थी। एक दिन मीना ने अपनी शिक्षिका से पूछा ''मैडम मैंने भुज में और तमिलनाडु में घटने वाली आपदाओं के विषय में पढ़ा था। इन से मुझे पता चला कि देश को प्रभावित करने वाली प्रत्येक आपदा में जन-धन और आजीविका की भारी हानि हुई है। मैडम क्या यह देश की अर्थव्यवस्था की भारी हानि नहीं है। विकास के लिए किए जा रहे कार्य तुरंत रुक जाते हैं। क्या इन आपदाओं को घटने से रोका नहीं जा सकता?यह सुनकर कक्षा का छात्र राहुल हंसने लगा। फिर कक्षा के अन्य विद्यार्थियों ने यह सोचकर कि यह कैसा बेहूदा सवाल था ही-ही करनी शुरू कर दी। मिस रेणु ने डेस्क थपथपाया और कहा ''विद्यार्थियों चुप हो जाओ, इसमें हंसने जैसी कोई बात ही नहीं थी। यह एक अच्छा सवाल है। हमें इस पर सोचना चाहिए तथा मीना के सवाल का उत्तर देना चाहिए। कक्षा में अचानक चुप्पी छा गई। एक लड़के ने उठकर कहा ''मैडम मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। हमें स्कूल में इसके लिए तैयार रहना चाहिए। हमें इस जानकारी को

अपने घरों तक भी ले जाना चाहिए और एक परिवार/घर आपदा प्रबंधन योजना तैयार करना चाहिए ताकि हमारे प्रियजन सुरक्षित रह सकें।''

कक्षा के एक कोने में बैठी दूसरी छात्रा शीला ने कहा, ''विचार उत्तम हैं। लेकिन मैडम हम ऐसा क्या करें जिससे हमारे स्कूल और घर सुरक्षित हो जाएं।'' थोड़ा सा रूककर मिस रेणु बोली ''पहले हमें अपने आसपास मौजूद विभिन्न संकटों और असुरक्षाओं के प्रति जागरूकता पैदा करनी चाहिए। इसके बाद तैयारी के उपायों के विषय में सोचना चाहिए।'' कक्षा खत्म हो गई, लेकिन विद्यार्थियों में स्कूल के विभिन्न असुरक्षित स्थानों के बारे में चर्चा चलती रही। मीना ने बरामदे में लटकते ढीले-ढाले बिजली के तारों के बारे में सोचा। उसने दीवारों की दरारे भी देखी, जिनमें सीलन आ गई थी। उसे शीशे के बड़े फलक भी दिखाई पड़े, जो तेज हवा में टूटकर गिर सकते थे। राहुल ने एक और सही बात कही कि उसके कुछ दोस्त दृष्टिहीन हैं। उन्हें आपदा आने पर विशेष देखभाल की ज़रूरत होगी ताकि उन्हें भी अन्य विद्यार्थियों के साथ सुरक्षित स्थान पर ले जाना जा सके। मीना ने निर्णय किया कि घर पहुँचते ही वह अपने और पड़ोसियों के घरों के संकट वाले स्थानों की खोज करेगी और फिर अपने पिता जी से भी बात करेगी। अन्ततोगत्वा, सुरक्षा सभी के लिए महत्वपूर्ण है।

इस कहानी को पढ़ने के बाद आपको अपने स्कूल के विभिन्न असुरक्षित स्थानों का पता चल गया होगा। नीचे दिए गए क्रियाकलापों को कीजिए और अपने स्कूल के संकट वाले स्थानों की पहचान कीजिए।

क्रियाकलाप – 3

- क्या आपका घर सुरक्षित है? (किसी संरचनात्मक इंजीनियर या सिविल इंजीनियर से सलाह कीजिए)
- क्या दीवारों और छत में कहीं सीलन और रिसाव है?
- क्या बिजली का कोई असुरक्षित जोड़ है?
- क्या छत और विभाजक दीवार किसी ज्वलनशील बोर्ड से बने हैं?
- क्या कुछ अल्मारियाँ, सजावट की वस्तुएं आदि भारी हैं जो भूकंप आने पर गिरकर चोट पहुँचा सकती हैं?
- क्या आपके घर तक जाने वाली सड़क इतनी चौड़ी है कि उसमें दमकल और चिकित्सावाहन आसानी से आ सकते हैं?
- क्या आपका घर निम्न भूमि पर बना है, जिसमें भारी बरसात होने पर पानी भर सकता है?

स्कूल में सुरक्षित वातावरण बनाने के लिए यह ज़रूरी है कि स्कूल और घर की आपदा प्रबंधन योजनाएं तैयार की जाएं, ताकि आपदा के समय होने वाली हानि को कम किया जा सके। आइये अब हम स्कूल आपदा प्रबंधन योजना के आवश्यक अंगों का विश्लेषण करने का प्रयत्न करें।

स्कूल आपदा प्रबंधन योजना के अंग

1. **शिक्षकों और स्कूल प्रशासन में संवेदीकरण और जागरूकता :** स्कूल आपदा प्रबंधन योजना बनाने से पूर्व स्कूल से जुड़े मुख्य व्यक्तियों का संवेदीकरण करना बहुत ज़रूरी है। स्कूल के मुख्य व्यक्ति हैं प्रधानाचार्य, उपप्रधानाचार्य, स्कूल के प्रबंधक, प्रशासनिक कर्मचारी, शिक्षक और प्रमुख विद्यार्थी। संवेदीकरण से इन सभी को योजना की आवश्यकता और महत्व का पता चल जाएगा।

2. **आपदा प्रबंधन समिति का गठन :** इस समिति के सदस्यों के ऊपर स्कूल की योजना बनाने के लिए मार्ग दर्शन की जिम्मेदारी होगी। इन्हें स्कूल में नियमित रूप से नकली अभ्यास करवाने होंगे। इस समिति का अध्यक्ष होने का श्रेय स्कूल के प्रधानाचार्य को मिलना चाहिए। स्कूल के सक्रिय सदस्यों को ही समिति में शामिल किया जाना चाहिए। ऐसे सदस्यों में शिक्षक, प्रमुख लड़के/लड़कियाँ, अभिभावक-शिक्षक संघ का प्रतिनिधि, स्थानीय प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग का प्रतिनिधि, गैर सरकारी संगठन, नागरिक सुरक्षा, बाजार व्यापारी संघ, राष्ट्रीय कैडेट कोर, राष्ट्रीय सामाजिक सेवा, स्काऊट और गाइड, नेहरू युवा केन्द्र संगठन से एक दो सदस्य, उपयुक्त होंगें।

3. **संकट की पहचान और आकलन :** स्कूलों के प्रांगण में आने वाले संकटों को जानना बहुत ज़रूरी है। संकट संरचनात्मक और गैर संरचनात्मक हो सकते हैं। स्कूल पर दुष्प्रभाव डालने वाले (कमजोर कंक्रीट से बना भवन) सरंचनात्मक संकटों की पहचान करनी चाहिए। इसके साथ ही गैर संरचनात्मक संकटों का भी पता लगाना चाहिए। स्कूल में अलमारियों, बत्तियों और अन्य वस्तुएँ, ट्राफी, स्कूल की प्रयोगशाला में रखे रसायन आदि गैर-संरचनात्मक संकटों की श्रेणी में आते हैं।

   उदाहरण के लिए बडोदरा में स्थित स्कूल को बाढ़, चक्रवात और भूकंप के संकटों के लिए तैयार रहना चाहिए। बडोदरा भूकंप प्रवण भी है। प्राकृतिक संकटों के अलावा स्कूल में और भी संकट आ सकते हैं। आग, सड़क दुर्घटनाएँ आदि ऐसे ही संकट हैं। स्कूल की संरचनात्मक सुरक्षा को देखना भी ज़रूरी है। ऐसे भी उदाहरण मौजूद हैं जहाँ स्कूल के भवन भारी वर्षा या भूकंप के हल्के झटकों से ही ढह गए। स्कूल संरचनात्मक या सिविल इंजीनियरों की सहायता ले सकता है। ये लोग स्कूल के भवन की संरचनात्मक सुरक्षा का आकलन कर सकते हैं।

4. **संसाधनों की सूची :** मानव और भौतिक आपदा से निबटने के लिए जवावी कार्यवाही करने में मानव और भौतिक संसाधनों की प्रभावी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। स्कूल में उपलब्ध संसाधनों को काम में लाना चाहिए तथा उनकी स्थिति और संपर्क व्यक्ति की जानकारी के साथ एक सूची बनानी चाहिए। मानव संसाधन ये हैं : प्राथमिक उपचार, खोज और बचाव और आग बुझाने में प्रशिक्षित व्यक्ति तथा इन्हीं क्षेत्रों में प्रशिक्षित शिक्षक, प्रशासनिक कर्मचारी, वरिष्ठ विद्यार्थी।

   भौतिक संसाधनों में स्कूल में उपलब्ध शामिल वस्तुएँ है: सीढ़ियाँ, रस्सियाँ, आग बुझाने के यंत्र, स्ट्रैचर, प्राथमिक उपचार बक्सा, संचार प्रणाली आदि। स्कूल के आस-पास उपलब्ध संसाधनों की जानकारी भी होनी चाहिए।

अस्पताल प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, क्लिनिक/दवाखाना, थाना आदि ऐसे ही संसाधन हैं। आपातकालीन स्थितियों में उनसे तुरंत संपर्क किया जा सकता है।

5. **मान चित्रण :** मान चित्रण का अभ्यास भी किया जाना चाहिए। इससे नए विद्यार्थियों और अन्य कर्मचारियों को बाहर निकलने के रास्ते और उपलब्ध संसाधनों की स्थिति की जानकारी मिल जाएगी। विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चार भिन्न प्रकार के मानचित्र उपलब्ध हैं।

क. **सामाजिक मानचित्र :** यह स्कूल की भौतिक स्थिति के विषय में बताता है। यह निम्नलिखित का अंकन करता है :

- स्कूल में कक्षा-कक्षों का संख्या (पक्के, लोहे-कंक्रीट के, टाइल वाले)
- स्कूल का अध्यापक कक्ष
- स्कूल की प्रयोगशालाएँ (भौतिकी, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, गृह विज्ञान आदि)
- स्कूल की कैंटीन और स्कूल का कोई प्रमुख भू-चिन्ह।
- स्कूल के परिसर में खेल के मैदान तथा खुले स्थान

ख. **संसाधन मानचित्र :** पहचाने गए और सूची बद्ध सभी संसाधनों (मानव और भौतिक) के मानचित्रण की जरूरत है। आपदा पड़ने पर आसानी से इन्हें ढूंढा जा सकता है।

ग. **असुरक्षा मानचित्र :** इसमें स्कूल भवन के असुरक्षित स्थानों को दिखाया जाता है।

- प्रत्येक कक्षा के बच्चों की संख्या (पुरुष, स्त्री, विकलांग और रोगी) प्रत्येक कक्षा के कमरे में दिखाना चाहिए।
- स्कूल के असुरक्षित कमरों की स्थिति, (स्कूल कैंटीन, प्रयोगशालाएं आदि कमजोर संरचना वाले, इन सभी की स्थिति मानचित्र में दिखाएं।
- स्कूल के मुख्य बिजली स्विच बोर्ड/क्षेत्र की स्थिति की पहचान।
- स्कूल के निम्न भूमि वाले क्षेत्रों की पहचान।

घ. **स्कूल का सुरक्षित स्थान और स्थान खाली करने के मार्ग का चार्ट :**

- इस मानचित्र में स्कूल के सुरक्षित स्थानों के पहचान की ज़रूरत है।

- सुरक्षित स्थान, जहाँ बच्चे और कर्मचारी आश्रय ले सकते हों।
- स्कूल के स्थान खाली करने के मार्ग का चार्ट। इसमें सभी सीढ़ियाँ, दरवाजे, खिड़कियाँ, खुले स्थान आदि दिखाने चाहिए।
- आग लगने/भूकंप की स्थिति में सभी बाहर निकलने के स्थान स्पष्ट रूप से दिखाने चाहिए।
- स्कूल से बाहर निकलने के मार्ग तीर द्वारा स्पष्ट रूप में दिखाने चाहिए।
- निर्मित मानचित्रों को स्कूल के कई स्थानों पर लगाना चाहिए।
- बाहर निकलने के एक ऐसे मार्ग को विकसित करने की ज़रूरत है जो पहले से विद्यमान मार्ग के स्थान पर काम में लाया जा सके।

6. **आपदा प्रबंधन दलों का गठन और प्रशिक्षण :** जागरूकता पैदा करने वाला दल : इस दल के सदस्य सृजनशील तथा कला और संस्कृति में रुचि रखने वाले होने चाहिए। यह दल विभिन्न संकटों के विषय में जागरूकता पैदा करेगा। स्कूल में आ सकने वाली आपदाओं के पहले, मध्य और बाद की स्थितियों के विषय में बतायेगा। जागरूकता पैदा करने के लिए प्रिंट और इलैक्ट्रानिक माध्यमों का उपयोग हो सकता है। पोस्टरों, लोक गीतों और लोक नृत्यों, फिल्मों का भी स्कूल में उपयोग हो सकता है।

- चेतावनी और सूचना प्रसारण दल : स्कूल में एक नियंत्रण कक्ष होना चाहिए। कक्षा 8 से लेकर कक्षा 12 तक विद्यार्थियों को नियंत्रण कक्ष संभालने की जिम्मेदारी दी जा सकती है। वी एच एफ सेट चलाने में प्रशिक्षित विद्यार्थी तथा हैम क्लब के सदस्य इस दल में शामिल होंगें। बाधाहीन संचालन के लिए विद्यालय में साइरन, घंटियाँ, झंडे, कंप्यूटर और इंटरनेट होना चाहिए।
- प्राथमिक उपचार दल : स्कूल में किसी के आहत होने पर यह दल प्राथमिक उपचार का दायित्व निभाएगा। आपातस्थिति में किया जाने वाला यह कौशल पूर्ण कार्य है। अत: इस दल को प्रशिक्षा देना जरूरी है। इनके प्रशिक्षण के लिए नागरिक सुरक्षा, दमकल सेवा, संेट जान ब्रिगेड, रेडक्रास आदि की सेवाएं ली जा सकती हैं।

- खोज और बचाव दल : स्कूल परिसर में किसी भी आपातस्थिति में खोज और बचाव का दायित्व इस दल का होगा। खेल शिक्षक तथा स्कूल के वरिष्ठ विद्यार्थी इस दल के सदस्य होने चाहिए।

- स्कूल की आवश्यकतानुसार अन्य दलों का गठन किया जा सकता है। इसमें आग से सुरक्षा दल, बस सुरक्षा दल, स्थल सुरक्षा दल आदि हो सकते हैं।

- गठित दलों को कौशल वाले जैसे प्राथमिक उपचार, खोज और बचाव ई–सुरक्षा आदि काम करने होंगे। अत: इनको प्रशिक्षण देना ज़रूरी है। इस काम में दमकल सेवा विभाग, नागरिक सुरक्षा, पुलिस, रेडक्रास / सेंट जान ब्रिगेड आदि की मदद ली जा सकती है।

7. **नकली अभ्यास (मॉक ड्रिल) :** विद्यालय द्वारा तैयार की गई आपदा प्रबंधन योजना के तत्वों के परीक्षण के लिए नकली अभ्यास किए जाने चाहिए। स्कूल, अपनी आपदा प्रबंधन समिति के मार्ग दर्शन और सहायता से आ सकने वाली परिस्थितियों का अभ्यास का सकता है। ये प्राय: किए जाने वाले नकली अभ्यास आपात स्थिति पैदा होने पर प्रभावी जवाबी कार्यवाही करने में सहायता करेंगे।

भूकंप प्रवण क्षेत्रों में 'झुको, ढको और ठहरो' जैसे अभ्यास किए जाते हैं। विद्यार्थियों और शिक्षकों से योजना के बारे में सलाह करके नकली अभ्यास किये जा सकते हैं। इसके लिए नकली परिस्थितियाँ पैदा करके प्रभावी जवाबी कार्यवाही करने की क्षमता को परखा जा सकता है।

8. **योजना का पुनरीक्षण, स्वीकृति और आधुनिकीकरण :** केवल योजना बनाना और नकली अभ्यास करना ही काफी नहीं है। योजना का पुनरीक्षण भी ज़रूरी है, ताकि कमियों को पहचान कर उन्हें दूर किया जा सके। योजना के तैयार होने के बाद आपदा प्रबंधन समिति को इसकी स्वीकृति देनी चाहिए। जिला स्तर के अधिकारियों को भी योजना की जानकारी देनी चाहिए। इन अधिकारियों में जिला न्यायाधीश या जिला शिक्षाधिकारी प्रमुख होते हैं। अब हम स्कूल आपदा प्रबंधन योजना के विभिन्न अंगों के बारे में जान गए हैं। अत: जिम्मेदार विद्यार्थी और शिक्षक होने के नाते हमारा यह दायित्व हो जाता है कि हम इस पहल को स्कूल की सीमाओं के बाहर घरों और समुदाय तक भी ले जाएँ।

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि स्कूल आपदा प्रबंधन योजना के अंगों का, घरों के लिए योजना बनाने में भी उपयोग हो सकता है।

किसी भी भावी घटना के लिए प्रत्येक परिवार को तैयार रहना चाहिए। विद्यार्थियों को अपने परिवार के साथ बैठकर इन पर चर्चा करनी चाहिए:

- कौन सी आपदाएं आ सकती हैं।
- आपको किस प्रकार की तैयारी करनी चाहिए (जैसे अपने परिवार के लिए आपदा किट बनाना)
- यदि आपको स्थान खाली करने के लिए कहा जाए तो आप क्या करेंगे।
- आग लगने पर अपने घर से दूर कहां मिलना है। (जैसे पड़ोसी का घर या सड़क का कोई कोना)
- यदि स्थान खाली करना पड़े तो पड़ोस में कहां मिलना है। आपको किसी संबंधी या पड़ोसी का घर तय कर लेना चाहिए।
- आपदा के दौरान यदि आप अपने परिवार से बिछुड़ गए हैं तो फोन करे जाने का स्थान तय होना चाहिए। आपको किसी अन्य राज्य में रहने वाली किसी प्रिय चाची, ताई, मामी, बुआ आदि का फोन नंबर याद होना चाहिए। वहां फोन करके आप बता सकते हैं ताकि आपका परिवार आप को खोज सके।
- अपने परिवार के सभी सदस्यों का ब्लड ग्रुप चैक करवाएं।
- अपने क्षेत्र के प्रमुख टेलीफोन नंबरों की सूची सदैव अपने पास रखिए।
- आप आपदा योजनाओं के विषय में अपने पूरे पड़ोस और आवासी कल्याण संघ से भी बातचीत कर सकते हैं। पता लगाइये कि आपके पड़ोस में कोई विशिष्ट कौशल वाला व्यक्ति, जैसे डॉक्टर रहता है।
- यह सदैव से अच्छा विचार रहा है कि आप प्राथमिक उपचार का प्रशिक्षण ले लें ताकि आप दूसरों की मदद के लिए तैयार रह सकें।

पारिवारिक आपदा किट को बनाना

प्रत्येक परिवार को अपने घरों में एक आपदा किट ज़रूर रखना चाहिए। यह किट आपदा के दौरान आपको और आपके परिवार की मदद करेगा। चक्रवात या भूकंप आने पर बिजली जा सकती है और पानी बंद हो सकता है। तूफान और बाढ़ के समय कुछ दिनों तक घर से बाहर नहीं जा सकते हैं। ऐसे दिनों में आपको केवल अपने ऊपर निर्भर रहना पड़ेगा। आपका आपदा आपूर्ति किट ऐसे में आपकी राह आसान बना देगा। याद रखिए कि शायद आपके परिवार को आपदा आपूर्ति किट की कभी ज़रूरत ही न पड़े, तो भी तैयार रहना बहुत अच्छा है।

आपदा के दौरान आपको घर छोड़ना पड़ सकता है और कुछ समय के लिए कहीं दूसरे स्थान पर सोने की ज़रूरत हो सकती है। यह चतुराई ही कही जाएगी कि यदि आप परिवार की इस्तेमाल की वस्तुओं को एक जगह रख लें। इन्हें पिट्ठू बैग में रखा जा सकता है। यह सुनिश्चित कर लीजिए कि आप इसे आसानी से ले जा सकते हैं। आपके पारिवारिक आपदा किट में निम्नलिखित वस्तुएं हो सकती हैं:

- गरम कपड़ों का जोड़ा
- भोजन की सूखी वस्तुएं और पानी
- ज़रूरी दस्तावेज
- बैटरी, टार्च, ट्रांज़िस्टर
- प्राथमिक उपचार बक्सा
- रोगियों के लिए दवाइयाँ
- प्रिय खिलौने और खेल
- कंबल, तकिया
- परिवार और पालतू जीव के फोटो और

ऐसी अन्य वस्तुओं के बारे में सोचिए जिन्हें आप इस सूची में शामिल कर सकते हैं।

नई दिल्ली के ग्रीनवुड अपार्टमेंट्स की आवासी कल्याण समिति की बैठक का एक परिदृश्य

भारत में नई दिल्ली के ग्रीनवुड अपार्टमेंट्स में सन् 1960 से 50 परिवार रह रहें हैं। इस समय वहां परिवारों की तीसरी पीढ़ियाँ रह रहीं हैं। 5 निवासी 80 वर्ष से अधिक आयु के हैं। वे परिसर की सभी समस्याओं और उनके समाधान से परिचित हैं। जून 2007 के भूकंप के दौरान लिफ्ट की दीवार में एक दरार पड़ गई थी। दरार लिफ्ट की पिछली दीवार में भूतल से छठी मंजिल तक गई थी। रविवार को 11 बजे दिन में आवासी समिति की एक आपातकालीन बैठक **सुरक्षा उपायों पर विचार करने के लिए** बुलाई गई।

11 बजे तक कोई नहीं आया। 11.15 बजे समिति के अध्यक्ष सचिव और कोषाध्यक्ष आए। 11.30 बजे तक 7 सदस्य और पहुँच गए। बैठक स्थगित करके पुनः आयोजित की गई और कार्यवाही शुरू हुई।

अध्यक्ष : आप सबका यहाँ आने के लिए धन्यवाद। जैसा कि आप जानते हैं कि हमें इस भवन को मजबूत करने के लिए अत्यावश्यक उपाय करने होंगे मे ताकि भविष्य मे इसे और क्षति न पहुँचे। सचिव महोदय ने वास्तुकार (आर्किटेक्ट) से परामर्श करके अनुरूपान्तर (अधिक मजबूती) के लिए एक योजना बनाई है। इस पर प्रत्येक व्यक्ति को 20,000/– रुपए लागत के रूप में देने होंगे।

सचिव : योजना बिल्कुल साधारण है। हमें लिफ्ट की दीवारों पर एक तल छोड़कर हर दूसरे तल पर धातु की पट्टियां लगाकर उन्हें मजबूत बनाना है। फर्श के चारों ओर भी कसी हुई पट्टियां लगानी है। भवन खंभों पर बनी है। हमें अब तक बने सभी खंभों के बीच एक खंभा और बनाना है तथा एक दीवार का निर्माण भी करना हैं। वास्तुकारों की राय में वर्तमान भवन भूकंपरोधी नही है। धन संग्रह के बाद इस काम के पूरा होने में छ: महीने का समय लग जाएगा।

सबसे पुराना सदस्य : मैं यहां विगत 28 वर्षों से रह रहा हूँ। इस अवधि में अनेक भूकंप आए हैं। कोई भारी नुक्सान तो हुआ नहीं है। अब इतनी चिंता किस लिए।

सदस्य- (सिविल इंजीनियर) : श्रीमन पिछले 28 वर्षों में भवन काफी कमजोर हो गया है। इसे लंबी अवधि तक सुरक्षित रखने के लिए इसको मजबूती प्रदान करना ज़रूरी हो गया है। लेकिन मजबूतीकरण के इस प्रस्ताव से मैं सहमत नहीं हूँ। हमें आधारी संरचना को फिर से बनाना होगा तथा सभी गैराजों को ढकना होगा। मेरा सुझाव है कि लिफ्ट की दीवार की तुरंत मरम्मत की जानी चाहिए और कोई बेहतर हल खोजना चहिए।

सचिव : सुशांत! क्या तुम इसमें हमारी मदद कर सकते हो।

सदस्य (सिविल इंजीनियर): नही! मुझे खेद है। मैं बहुत व्यस्त हूँ तथा यू.स.ए. जा रहा हूँ। आपको समिति के किसी अन्य सदस्य को ढूंढना होगा। इतना मैं देख लूंगा कि सुझाव अच्छे हैं या नहीं।

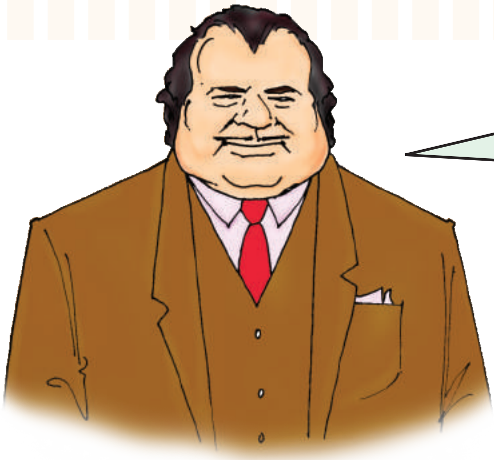

सदस्य (व्यापारी) : ठीक है! मैं मदद कर सकता हूँ ; लेकिन यह लागत बहुत अधिक है। हमे कोई और सस्ता विकल्प खोजना होगा। मुझे बताया गया है कि अगर हमारे पास बाहर निकलने के अच्छे मार्ग हैं, तो हम बड़ी जल्दी भवन से बाहर आ सकते हैं। इस प्रकार क्षति को कम किया जा सकता है। क्या यह मजबूती करने पर इतना खर्च करने से बेहतर नहीं हैं।

सचिव : इसकी भी योजना बनाई गई है, लेकिन भवन काफी पुराना हो चुका है। अत: इसे क्षति और कमजोर होने से बचाने के लिए कुछ उपाय तो करने ही होंगें।

सदस्य (गृहस्थिन) : देखिए! मैं यहां पूरे दिन रहती हूँ। आपातकालीन स्थिति में मैं भागने में भी असमर्थ हूँ। मुझे नही पता कि भवन कब खाली करना चाहिए। आपने कभी कृत्रिम अभ्यास भी नहीं किया है। मैं नहीं जानती कि मुझे क्या करना है।

सचिव : हाँ! मैं सहमत हूँ। क्या यहाँ उपस्थित महिलाएं कोई तिथि और समय निश्चित कर सकती है, जब वे इकट्ठी हो कर कृत्रिम अभ्यास में हिस्सा ले सकें। यह अभ्यास महिलाओं और बच्चों के लिए होगा। मेरा निवेदन है कि भूकंप आने पर आप घबराएं नही। आपको अपार्टमेंट्स छोड़ने और नीचे आने के लिए काफी समय मिलेगा। लेकिन आप अपनी कीमती चीजें, महत्वपूर्ण दस्तावेज, जैसे वोटर पहचान पत्र, बैंक के दस्तावेज आदि ऐसी जगह रखिए जहां से बाहर जाते समय आसानी से उठा सकें।

सदस्य (गृहस्थिन) : हमें एक निष्क्रमण टोली का गठन करना चहिए, जिसे पता हो कि पहिएदार कुर्सी कहाँ है, किन्तु घरों से बूढ़ों को निकालना है। युवक–युवतियों को इसमें मदद करनी चाहिए।

सचिव : ठीक है! इसे प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाएगा। लेकिन मजबूती करने के विषय में आपकी क्या राय है।

सदस्य (गृहस्थिन) : मैं इस विषय में कुछ नहीं कह सकती; यह महँगा है। कृपया हमें कुछ और बातें बताईये और वास्तुकार को बुलाकर योजना के विषय में विस्तृत जानकारी दिलवाइये।

सदस्य (सबसे पुराने) : मै अब भी यही मानता हूँ कि कुछ नही होगा। यह मेरा वादा है। आप बेकार डर रहे हैं।

सचिव : मैं समझता हूँ कि आप सभी इस बात से सहमत है कि हमें दीवार की मरम्मत कर देनी चाहिए तथा इसके बाद शेष भवन के बारे में सोचना होगा।

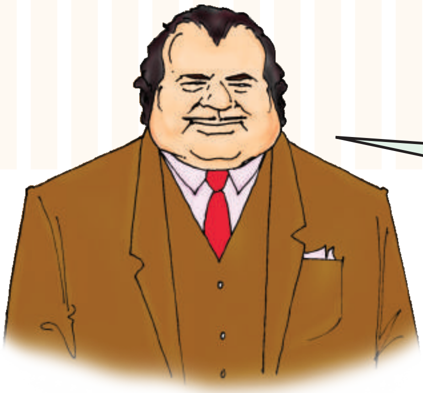

सदस्य (व्यापारी) : मैं खर्चों पर निगाह रखूंगा तथा अच्छी गुणवत्ता वाला सामान खरीदने में मदद करूंगा। कृपया मुझे भी समिति में रख लीजिए।

सचिव : सभी का धन्यवाद। निष्क्रमण के कृत्रिम अभ्यास का आयोजन श्रीमती जोशी करेंगी तथा इसकी सूचना नोटिस बोर्ड पर लगा देंगी।

सदस्य (गृहस्थिन) : इस बार मैं कर लूँगी। अगली बार के लिए किसी और को चुन लीजिए।

सचिव : धन्यवाद!

कुछ विचारणीय प्रश्न

ऊपर के संवादों से यह पता चलता है कि सबको विश्वास दिलाना आसान नहीं है कि आपदा के लिए योजना बनाना और तैयारी कितनी ज़रूरी है। आपके विचार से सचिव को क्या करना चाहिए था?

क्या आवासी कल्याण सभा के सदस्यों के विचार सही थे या यह केवल उनकी राय ही थी? भवन को कैसे सुरक्षित बनाया जा सकता है? क्या बैठक और उसके बाद की कार्यवाही ने भूकंप आने पर सदस्यों द्वारा जवाबी कार्यवाही करने में कुछ मदद की? अब आगे पढ़िये :

25 नवंबर 2007, 23.00 बजे
दिल्ली-हरियाणा सीमा पर सामान्य तीव्रता वाला एक भूकँप आया।

ग्रीनवुड अपार्टमेंट्स के कुछ निवासी जाग रहे थे। कुछ टेलीविजन देख रहे थे, या सोने की तैयारी में थे। कुछ लोग अब तक सो भी गए थे। जब झटके महसूस हुए तो निवासी चौकन्ने हो गए। गेट के चौकीदार ने खतरे की घंटी बजा दी। जब झटके बंद हुए, तो निवासियों ने अपने परिवारिक आपदा बैग निकाले तथा सीढ़ियों से नीचे आ गए और निश्चित योजना के अनुसार बाहर के मैदान में इकट्ठे हो गए। घर छोड़ते समय पड़ोसियों ने बड़े-बूढ़ों को बाहर निकालने में मदद की।

वेब संसाधन

और जानकारी के लिए निम्न वेबसाइट को देखें :

1. http://www.fema.gov/kids/: website of Federal Emergency Management Agency.
2. www.ndmindia.nic.in/ Website of National Disaster Management Division, Ministry of Home Affairs, Government of India
3. www.undp.org/in: website of UNDP India
4. http://www.whatstheplanstan.govt.nz/mcdem/index.html

अभ्यास

1. स्कूल आपदा प्रबंधन समिति द्वारा आपदा से पहले, दौरान और बाद में किए जाने वाले कार्यों की पहचान कीजिए।
2. प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में जागरूकता पैदा करने के लिए जागरूकता अभियान दल द्वारा किए जाने वाले कार्यों की सूची बनाइये।
3. आप के विद्यालय में प्राथमिक उपचार और खोज और बचाव के प्रशिक्षण के लिए किन संस्थाओं से सम्पर्क करना चाहिए?
4. अपनी कक्षा में आग लगने का नकली अभ्यास करने के लिए आवश्यक संसाधनों को पहचानिए।